27 अप्रैल2015

नाइजीरिया का 2015 का ऐतिहासिक चुनाव: देश और महाद्वीप के लिए इसका क्या मायने है?

डॉ. निवेदिता रे

नाइजीरिया के राज्य चुनावों में , मुहम्मदू बुहारी की ऑल प्रोग्रेसिव कांग्रेस पार्टी (एपीसी) ने देश के 36 राज्यों में से दो - तिहाई में जीत हासिल की, इसके दो सप्ताह बाद राष्ट्रपति पद के चुनाव में कांग्रेस के अध्यक्ष गुडलक जोनाथन को हराकर इतिहास बनाया।राष्ट्रपति जोनाथन की पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी),जिसने 1999 में सैन्य शासन की समाप्ति के बाद से राष्ट्रपति पद और नाइजीरिया की 36 राज्य सरकारों के बहुमत को नियंत्रित किया था , उसे राज्य स्तर पर राष्ट्रपति और राज्यपालों दोनों चुनावों में अपनी सबसे बुरी हार का सामना करना पड़ा।सत्तासीन राष्ट्रपति ने राज्य -निर्माण की भावना से, चुनावी हिंसा की आशंकाओं को देखते हुए, अपनी हार बड़ी ही विनम्रता से स्वीकार की है।यह चुनाव वास्तव में ऐतिहासिक है, क्योंकि इसने नाइजीरिया के राजनीतिक परिदृश्य में कई सकारात्मक बदलाव देखे हैं , देश और महाद्वीप के लिए इसका मतलब समझने के लिए इनका आगे विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

सबसे पहले, यह चुनाव संस्थागत परिवर्तन का प्रतीक है जिसने पीडीपी के शासन को उखाड़ फेंका।कई चुनौतियों के बीच, नाइजीरिया के स्वतंत्र राष्ट्रीय निर्वाचन आयोग (आईएनईसी) ने पिछले चुनावों के विपरीत , जिनमें आंशिक रूप से चुनावी अनाचारों द्वारा पीडीपी के राष्ट्रपतियों की जीत में "सहायता" की जाती थी ,विश्वसनीय चुनावों तक पहुंचने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।चुनावों के दौरान कुछ तकनीकी हिचकोले और हिंसा की छिटपुट घटनाएं हुईं, लेकिन इन सबके बीच पर्यवेक्षकों ने चुनाव को सुचारू और व्यवस्थित रूप से संपन्न किया।स्वतंत्र राष्ट्रीय चुनाव आयोग के अध्यक्ष, अटाहिरू जेगा की अथक निष्पक्षता कोचुनावों की सफलता के लिएकाफी हद तक जिम्मेदार ठहराया गया है, वे विश्वविद्यालय के पूर्व लेक्चरर हैं तथा अपनी ईमानदारी के लिए जाने जाते हैं।पिछले चुनावों में इस्तेमाल किए गए धांधली के तरीकों का अध्ययन करने के बाद वे चुनावी प्रक्रिया में सुधार कर पाए हैं।उन्होंने वोट में धोखाधड़ी को कम करने और चुनाव की विश्वसनीयता को बढ़ावा देने में मदद के लिए मतदाता पंजीकरण प्रणाली के कार्यान्वयन , हजारों चुनाव कर्मचारियों के प्रशिक्षणऔर बायोमेट्रिक रीडरों केउपयोग जैसे विभिन्न उपायों को अपनाया।विश्लेषकों ने कहा है कि वे किसी भी तरफ से दबाव में नहीं आये थेऔर घोषित परिणामों के बारे में बहुत सावधान थे।उनके ईमानदार दृष्टिकोण से चुनावों में भारी अंतर आया, इसने मतदाताओं का विश्वास बढ़ाया और परिणामों को स्वीकार करने में उनकी मदद की।ऐसी संस्थागत शक्ति के गहरे निहितार्थ हैं।यह भविष्य में, निरंतर सुधारों के साथ नाइजीरिया को एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरनेके लिए प्रेरित करता है।

दूसरे, पदासीनराष्ट्रपति की सत्ता पर कब्जा करने की लिए इच्छा त्यागना भी इस चुनाव में देखा गया एक स्वागत योग्य बदलाव है, जिसने दुनिया भर का ध्यान आकर्षित किया और इसकी प्रशंसा की।एक ऐसे महाद्वीप में, जहां नेता अक्सर पद छोड़ने से इनकार करते हैं , गुडलक जोनाथन ने ऐसा करके इस महाद्वीप के लिए एक उदाहरण स्थापित किया है कि लोकतंत्र और सरकार का शांतिपूर्ण संक्रमण काम कर सकता है।यह उन्हें उन अवलंबियों के साथ खड़ा करता है , जो चुनाव हार गए और सेनेगल, बेनिन, जाम्बिया, घाना, केन्या, नामीबिया और मलावी जैसे देशों में शांतिपूर्वक विपक्ष को सत्ता सौंप दी।लेकिन अधिकांश अफ्रीकी देशों में, लड़ाई बहुत अलग तरह की रही है।बुरुंडी, रवांडा और डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (डीआरसी) जैसे देशों के, नवीनतम घटनाक्रम बताते हैं कि राष्ट्रपति अपने देश के संविधान द्वारा अनुमत अवधि से परे सत्ता में रह सकते हैं।मिसाल के तौर पर राष्ट्रपति पॉल कागाम ने संवैधानिक बदलाव के लिए एक मीडिया अभियान शुरू किया है जो उन्हें 2017 में तीसरे कार्यकाल के लिए चुनाव लड़ने की अनुमति देगा।सूडान में, 13 और 14 अप्रैल को हुए राष्ट्रपति चुनाव में शासन परिवर्तन की संभावना बहुत कम है।हालांकि यह देखना बाकी है कि क्या महाद्वीप पर नाइजीरिया का प्रभाव पड़ेगा , लेकिन निश्चित रूप से, जोनाथन का हार स्वीकार करना एक आरोपित निरंकुशता को चुनौती देना है।नाइजीरिया के भीतर , यह लोकतंत्र को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

तीसरा उल्लेखनीय बदलाव एक मजबूत विपक्षी मंच का उदय है , जो चुनावी और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत बनाने में योगदान देता है।विविध राष्ट्रीय समर्थन के साथ एक व्यवहार्य विपक्षी पार्टी के उभरनेसे नाइजीरिया में एक अधिक समावेशी और स्थिर राजनीतिक व्यवस्था की उम्मीद जगी है। 1999 से, सत्तारूढ़ पीडीपी के भीतर हर चार साल पर वैकल्पिक राष्ट्रपति पद के लिए दक्षिण के इसाई और उत्तर के मुसलमान कुलीनों के बीच एक सत्ता-साझाकरण समझौता रहा है।यह विशिष्ट समझौता बुहारी की जीत के साथ समाप्त हो गया , जिससे एक विपक्षी पार्टी की व्यवहार्यता साबित हुई और एक वास्तविक दो -पक्षीय प्रणाली का उदय हुआ - कई विश्लेषकइसे महाद्वीप में लोकतंत्र के परिपक्व होने का संकेत मानते हैं। कुछ इसे कई अफ्रीकी देशों के लिए एक चुनौती के रूप में भी देखते हैं , जिनमें एक पार्टी का शासन है।नोबेल पुरस्कार विजेता, वूले सोयिंका के अनुसार, ऐसे परिणाम से पूरे दक्षिण अफ्रीका के महाद्वीप में एक प्रतिध्वनि उत्पन्न होने की संभावना है, जहां एएनसी अंगोला, इथियोपिया, सूडान, जिम्बाब्वे, रवांडा और इक्वेटोरियल गिनी जैसे देशों में21 वर्षसे सत्ता में है, जो प्रभावी रूप से एक पार्टी के शासन वाले लोकतंत्र है, जहाँ विपक्षी राजनीति की अवधारणा केवल कहने मात्र के लिए है।हालांकि, कुछ विश्लेषकों ने तर्क दिया है कि इस महाद्वीप पर ऐसे प्रभाव की संभावना नहीं है।फिर भी , नाइजीरिया का उदाहरण महाद्वीप को एक मजबूत संदेश भेजता है, जिससे विपक्षी राजनीति के मजबूत होने की उम्मीद है।

अंत में , इस चुनाव में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन राजनीतिक संस्कृति में हुआ है –जो उदासीनता से सक्रिय राजनीतिक भागीदारी का एक कदम है।लोगों को अपने वोट के इस्तेमाल से लोकतांत्रिक प्रक्रिया को गहरा बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका की समझ आ गई है।यह देखा गया कि हिंसा की आशंकाओं , वोट-रिगिंग के अनुमान और चुनाव के दिन में छह सप्ताह की देरके बावजूद, मतदान अभूतपूर्व था।इन चुनावों में एक युवा आबादी भी देखी गई जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अधिक राजनीतिक रूप से शामिल हो गई है।उनकी भागीदारी इस तथ्य को देखते हुए आश्चर्य की बात नहीं है कि वे 170 मिलियन की मजबूत आबादी में 70 प्रतिशत हैं, और 30 से कम उम्र के हैं, जो बुहारी के 18 महीने के शासन के बाद पैदा हुए हैं।मतदान केंद्रों पर मतदाताओं के देर रात तक रहने और मतदान प्रक्रिया की निगरानी करने की खबरें थीं।इससे पता चलता है कि इस बार लोग अपनी सरकार को जवाबदेह बनाने के लिए गंभीर थे , जो भविष्य में बेहतर प्रशासन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।लगता है कि प्रदर्शन और जवाबदेही के बीच एक कड़ी स्थापित हो गई है।यह शेष महाद्वीप को एक मजबूत संकेत भेजता है।रवांडा, बुरुंडी, डीआरसी, सूडान के नेता, जो सत्ता में रहने की सोच रहे हैं, वे इसका स्वागत नहीं करेंगे।लेकिन निश्चित रूप से, राजनीतिक संस्कृति में यह बदलाव लोकतंत्र के समेकन के लिए महत्वपूर्ण है।

2015 के नाइजीरिया के चुनाव को एक ऐसे चुनाव के रूप में याद किया जाएगा जिसने दुनिया भर में उन लोकतांत्रिक बदलावों की ओर ध्यान आकर्षित किया , जिनमें इसकी शुरुआत हुई।इसने नाइजीरिया की लोकतांत्रिक साख में सुधार किया है , जिससे देश को अफ्रीकी संघ में क्षेत्रीय समूह , ईसीओडब्ल्यूएएस और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में अधिक विश्वसनीयता, ताकत और सौदेबाजी की शक्ति मिली है।देश के भीतर, इन परिवर्तनों ने शासन को मजबूत करने, भ्रष्टाचार को साफ करने और बोको हराम विद्रोह के प्रसार को रोकने की संभावनाओं को उन्मोचितकिया है।

*****

*डॉ. निवेदिता रे, भारतीय विश्व मामले परिषद, नई दिल्ली में अध्येता हैं

*

अस्वीकरण: व्यक्त मंतव्य लेखक के हैं और परिषद के मंतव्यों को परिलक्षित नहीं करते।